आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में चलेगा नवरात्रा अनुष्ठान

सरदारशहर 7 अक्टूबर, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में मुनि किशनलाल के निर्देशन में दिनांक 8 अक्टूबर से 16 अक्टूबर तक नमस्कार महामंत्र एवं नवपद आराधना अनुष्ठान चलेगा। दोपहर 2 बजे से 3 बजे तक स्थानीय तेरापंथ भवन के प्रवचन स्थल पर अनुष्ठान होगा जिसमें अनेक भाई-बहन भाग लेंगे।

मुनि किशनलाल ने मंत्र का महत्व बताते हुए कहा कि मंत्र शब्द की उत्पति से स्पष्ट है कि जो मनन करने से त्राण करता है, रक्षा करता है उसे मंत्र कहा गया है। मनन का दूसरा अर्थ है पुनः चिन्तन और उच्चारण है। जिसके पाठ से इष्ट की सिद्धि होती है उसे मंत्र कहा गया है। मंत्र गोपनीय और गुप्त विद्या है।

मंत्र की साधना इसलिए जरूरी है कि संसार में अनेक प्राणी कर्मों से पीड़ित है, कर्म बंधन में व्यक्ति स्वतंत्र है। जैन धर्म की मौलिक मान्यता के अनुसार आत्मा अच्छे-बुरे कर्म की स्वयं कर्ता और उपभोगता है। आश्विन माह के नवरात्रि में शक्ति जागरण और अपने अशुभ कर्मों के क्षय का उत्तम अवसर होता है।

शांति, शक्ति, सज़्पत्ति तथा बुद्धि के रूप में विश्व में पूजित शक्तियों का आधार नमस्कार महामंत्र ही है। नमस्कार महामंत्र का जप किसी भी परिस्थिति या अवस्था में किया जा सकता है, उसके स्मरण से दुःख दूर होते हैं।

- **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)